दूसरा अध्याय

मेरी जीवन यात्रा

हे सेवकों और मेरी जीवन कथा सुनो! मेरा यह शरीर बहुत पापों का था। मैंने इसमें रहकर बहुत कष्ट उठाए हैं और माता-पिता, भाई-बन्धु किसी से भी मेरा दुःख बटाया नहीं गया। मैंने अपने विषय में माता-पिता से सुना था कि "जब तुम साल भर के हुए थे तो तुम्हारी गर्दन पर बेल निकली और बारह वर्ष तक खून और राध (पीप) टपकती रही। एक बार गढ़ मुक्तेश्वर, गंगा जी स्नान कराने गये तो वहां पर तुम्हारा शरीर पूरा हो गया फिर उठाकर गंगाजी में नहला कर गोद में लेकर बैठकर गंगा के किनारे रोने लगे, कुछ देर बाद तुम्हारे शरीर में गरमाई आकर प्राण यानि सांस चलने लगे। फिर गंगा जी पर पांच रूपये प्रसाद का बांटा क्योंकि उस टाईम पांच रूपये सौ रूपये जैसे होते थे, फिर घर ले आए।" जब पढ़ने योग्य हुआ, स्कूल में दाखिल कराया। पढ़ते समय बेल ने बहुत अड़चन की। बारह साल बाद बेल अपने आप ठीक हो गई और आंखों पर नजला पड़कर अन्धा हो गया। फिर मेरे माता-पिता मुझको लेकर जमना पार हरियाणा में समालखां

गांव के पास हस्पताल के अन्दर मेरी आंखों का आपरेशन कराया, कुछ दिन ठीक रहकर फिर दिखाई देना बन्द हो गया। उस समय मुझको बहुत भारी चिन्ता हुई और मैं दिन-रात रोने लगा कि मेरी उम्र किस तरह पूरी होगी। मेरा यह हाल देखकर मेरे माता-पिता मुझको लेकर बड़ौत हस्पताल में दाखिल हुए फिर प्यारेलाल डॉक्टर जो कि उस समय आंखों का आपरेशन करने में बहुत होशियार डॉक्टर था, उसने मेरी आंखों का बहुत प्रेम से ऑपरेशन किया। आंखों पर पट्टी बांधकर सात दिन तक अपने पास रखा, सात दिन बाद पट्टी खोली तो मेरी आंखों में कोई रोशनी नहीं मिली और डॉक्टर ने मेरे माता-पिता को हाथ जोड़कर ये शब्द कहे कि अब इनको कोई भी डॉक्टर, परमात्मा के बिना, रोशनी नहीं दे सकता। यह सदा के लिए अन्धा हो गया है। इतनी बात सुनकर मेरे माता-पिता हिड़की देकर रोने लगे और कहने लगे, "बेटा जो हमारा फर्ज था हमने अदा किया परन्तु तेरी किस्मत ने हमारा साथ नहीं दिया। हम अब लाचार हैं।" माता के ये शब्द सुनकर मैंने उनको धीरज देते हुए यह वचन कहा कि जो भगवान् को मंजूर है वही होगा आप इसकी चिन्ता न करो, चिन्ता करने से कुछ नहीं होगा, फिर मेरे चाचा ने कहा चलो अब घर चलेंगें, घर पर जाकर जैसा विचार होगा वैसा करेंगें, यहां रोने-पीटने से कुछ नहीं होगा।

हम घर पर आये और आकर भगवान के नाम पर निश्चय करके बैठ गये। फिर एक साधू आया। उसने मेरा हाल घर वालों से पूछकर मेरी आंखो का इलाज शुरू किया। साधू की दवाई डालने से मेरी आंखों में बहुत पीड़ा हुई। मैंने सारा दिन बहुत ही पीड़ा सहते हुए पूरा किया। फिर शाम को साधू जी ने दूसरी दवाई मेरी आंखों में डाली, मेरी आंखों की पीड़ा बन्द हो गई और कुछ मुझे पता नहीं, नशीली वस्तु पिलाकर नींद में सुला दिया। सोते समय मुझको सपने में साधू की शक्ल में महात्मा दिखाई दिया उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरकर यह वचन कहा कि "बच्चा तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो, आपकी आंख अच्छी हो जायेंगी। दवाई डालने की कोई जरूरत नहीं है। साधू जो यह कहकर हंसते हुए मुझको पुचकार कर चल दिये।" मैंने उनके जाने का शब्द सुना तो मैं एकदम चारपाई से नीचे कूद पड़ा और मैंने रोकर यह वचन कहा या तो मुझे रोशनी दो या मुझे अपने साथ ले चलो। ऐसा वचन कहते ही मेरी आंख खुल गई और मुझे अच्छी प्रकार दिखने लगा। उस दिन के बाद मेरा भगवान पर और साधुओं में अटूट प्रेम हो गया। उसके तीन दिन के बाद मैं बस्ता लेकर स्कूल में गया। जो मेरे मास्टर और साथी थे आकर मिले और कहा कि हमने आपको बहुत याद किया। मैंने उन सबको यह शब्द कहा कि मेरे दुःखी

होने पर मेरा किसी ने आकर दुःख सुख का पता नहीं लिया। तुम सब झूठे साथी हो, यह वचन सुनकर एक साथी ने कहा "इस दुनिया में कोई किसी का नहीं है। सब मतलबगर्जी हैं। बिना मतलब के कोई किसी का साथी नहीं है। साथी तो पाप और पुण्य, भगवान और धर्म है। अन्त समय और मुसीबत में ये साथ देते हैं। धन, दौलत और दुनियावासी साथी वक्त आने पर सब धोरा धर जाते हैं। इसलिए आप किसी का भी बुरा न मानो, सबसे प्रेम करो। एक दिन यहां से सबने बिछुड़ना है।" अपने उस साथी की बात सुनकर मुझे बहुत आनन्द आया। उसी समय एक साधू हमारे गांव के पास आया, उनके दर्शन कराने के लिए मुझे मेरा चाचा उनके पास ले गया। मैंने साधू के चरणों में लोटकर नमस्कार किया और मेरे अन्दर उनके दर्शन करके बहुत भारी खुशी हुई और उस साधू ने मुझको उठाकर बिठाया और आशीर्वाद दिया कि आप सच्चे साधू बनोगे। फिर मेरे चाचा ने मुझे अपने पास बिठाकर यह शब्द कहा कि "तू गायत्री मन्त्र का जाप किया कर।" तब से मैं सुबह, शाम प्रेम में मग्न होकर गायत्री मन्त्र का जाप करने लगा।

फिर मेरे चाचा ने मुझे अपने जीवन का हाल सुनाया और कहा, "हे भाई, इस दुनिया में कोई किसी का नहीं है। सब मोह ममता का जाल बिछाकर अपने चक्र में देकर दुःखों

में डालते हैं। और मतलब के बगैर कोई बात नहीं करते हैं। मैं छोटी-सी उम्र में घर वालों से छुपकर साधुओं के पास जाकर सत्संग करके ज्ञान सीखने लगा। फिर मेरे माता-पिता और भाई साधुओं के पास जाकर रोने-पीटने लगे और साधुओं से जबरदस्ती करके मुझे घर ले आये और मेरी शादी करने लगे। मैंने हाथ जोड़कर अपने पिता जी को कहा मैं शादी नहीं कराऊंगा और जो मेरी जबरदस्ती से शादी करोगे तो मैं अपनी जान खो दूंगा और जो शादी नहीं करोगे तो मैं घर पर रहकर आप लोगों की सेवा करके भगवान का भजन करूंगा। यह सुनकर मेरे पिता ने मेरी ये शर्त मंजूर कर ली। उस दिन से मैंने एक समय की सन्ध्या कभी नहीं छोड़ी और गांव में साधुओं का पता लगाने पर उनको दूध या भोजन कराये बिना मैंने भोजन नहीं किया और साल में जितनी पूर्णमासी आती हैं सबका व्रत रखता हूं। व्रत खत्म होने पर पांच कन्या जिमाना यह मेरा व्रत हमेशा रहा है। इसलिए मैं तुम्हें यह शिक्षा देता हूं कि किसी को अपने मुंह से बुरा न कहो, अपने तन, मन, वचन से बुरा न कर, किसी से लड़ाई झगड़ा न कर, सबसे प्रेम किया कर, और दिल लगाकर अपनी पढ़ाई किया कर और बुराई से बचकर अपना शरीर पुष्ट रखा कर, क्रोध करने से खून जलता है, शरीर से रोग पैदा होते हैं। इसलिए खुशी से रहा कर" यह कहकर "जैसा कर

तेरी मर्जी'' और मुझे बहुत प्यार से रखने लगा।

उस दिन के बाद मैंने अपने मुंह से किसी को भी गाली या बुरा वचन नहीं कहा। यह मेरा अब तक वचन का व्रत पक्का है। अपने चाचा की कथा सुनकर बचपन में ही साधू बनने का पक्का निश्चय किया और मन ही मन शादी न करने का पक्का प्रण किया। जब मैं अकेला एकान्त में बैठता तो यह सोचता कि मैं साधू कैसे बनूं। मुझे सेहत और पढ़ने का बड़ा शौक था। खेलकूद में भी बड़ी रुचि रखता था। कभी भी गन्दी सोसायटी में नहीं बैठा क्योंकि बचपन की मुसीबत और चाचा का ज्ञान हर वक्त साथ में खड़ा दिखता था। कुछ दिन के बाद मेरा मां जाया बड़ा भाई स्वर्गवास कर गया। मैंने यह मौत अपनी जिन्दगी में पहली बार देखी थी। इसको देखकर भाई बन्धु, माता-पिता कोई भी नजर नहीं आया। चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छा गया और मैं वैराग और विचार में फंसकर रात दिन सूखने लगा। जो कोई मुझसे पूछता कि तुझे क्या रोग हो गया है तो मैं यही जवाब देता कि भगवान ही जानता है, मुझे कोई पता नहीं है।

एक दिन मेरे मन में विचार आया कि कोई सच्चा गुरु तलाश करूं। यह संसार एक मेला है इसमें कोई भी अपना नहीं है। सब सौदागर बनकर आ रहे हैं। अपना-अपना समय पूरा करके चले जायेंगें, सब मतलब गर्जी है। माता-पिता,

भाई-बन्धु, आखिर में सभी यहीं रह जायेंगे। अकेले को जाना है। यह विचार कर घर से चल दिया और एक साधू से मिला उसको कहा आप मुझे अपना चेला बना लो। उस साधू ने कहा आप घर जाकर रूपये और टूम निकाल लाओ मैं तुझको चेला बना लूंगा। फिर मुझे बहुत दु:ख हुआ और भगवान से प्रार्थना की या तो मुझे अपनी शरण में लो नहीं तो मुझे मृत्यु दे दो। भगवान ने मेरी सुनवाई की और बड़ा भारी वैराग्य मेरे साथ किया। फिर मुझे सब कुछ झूठा दिखने लगा और घर से निकलकर यू.पी. पार करके हरियाणा के जिले करनाल में आया। वहां मुझको एक साधू मिला। देखकर बहुत खुशी हुई। मैंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, कि मुझे अपना शिष्य बना लो। साधू जी ने जवाब दिया मैं शिष्य नहीं बनाऊंगा आप रोहतक जिला अस्थल बोहर में जाकर साधू बनो। साधू के यह वचन सुनकर मैं बहुत दुखी हुआ फिर मन को धीरज देकर रेल में बैठकर सोनीपत आया। सोनीपत से मोटर में बैठकर रोहतक गया। वहां पर पता चला कि अस्थल बोहर पीछे रह गया है। उस समय मुझे बहुत भूख लगी हुई थी। मैं गुड़ और भूगड़े खरीदकर वापिस बोहर की तरफ चला। रोहतक की डिग्गी से निकलकर मैंने गुड़ भूगड़े खाने शुरू कर दिये। इतने में भगवान ने एक बूढ़ा मेरे पास भेज दिया। बूढ़े ने आकर मेरे से वे सारे गुड़ और भूगड़े मांग

लिए। मैंने उस बूढ़े की तरफ देखकर उसके कुर्ते की झोली में डाल दिये। बूढ़े ने भूगड़े लेकर नहर की पटरी पर जानवरों के आगे डाल दिये। फिर बूढ़े मुझे कहने लगा, "आप कहां से आये हो?" मैंने जवाब दिया "यू.पी. से आया हूं और बोहर जाना है।" बूढ़े ने कहा आप डरो मत, निर्भय होकर मेरे साथ चलो, में आपको भोजन जिमाकर बोहर भेज दूंगा। मैं बूढ़े के घर पर गया और मुझे अपने पुत्र की तरह समझकर बहुत प्यार से ताजा भोजन बनाकर खिलाया। और मैं भोजन जीमकर चारपाई पर सो गया। फिर मैं तीन-चार घंटे सोकर उठा। जो बूढ़ा मुझे अपने घर लाया था वह पृथीसिंह किशनपुरा गांव बसाने वाला था। उसने कहा तेरी इच्छा कहां जाना चाहवे जा सकता है। फिर मैं पृथीसिंह को नमस्कार करके अस्थल बोहर गया। वहां पर जाकर मैंने साधू गोबर उठाते और हल जोतते देखे, दूसरे कनपाड़े चिलम पीते देखे। उनको देखकर मैं वापिस चल दिया और शाम तक गऊशाला सिसाना के अंदर ताले राम भक्त के पास पीला बाना लेकर रहने लगा और गऊओं की सेवा करने लगा। परन्तु मन में शान्ति नहीं हुई। सच्चे गुरु की इच्छा मन में लगी रही। एक दिन मुझे केहरसिंह डॉक्टर मवेशियों के हस्पताल में मिले और मुझे बहुत प्यार किया। जब मैं उठकर चलने लगा तो डॉक्टर साहब ने मुझे नसीहत शिक्षा दी। यह कहा "हे भाई या तो

कोई सच्चा गुरु तलाश करके उससे ज्ञान सीखकर सच्ची फकीरी कर नहीं तो यह बाना उतारकर अपने मां-बाप की सेवा कर। यह बाना पहनकर चून मांग कर खाने से तुझे पाप लगता है। इसलिए तू अपने मन, इन्द्रियों को जीतकर सच्चा ब्रह्मचारी बन। इसी में तेरा भला होगा। मन को दुनिया से हटाकर भगवान की तरफ लगाना चाहिए और सच्चे साधुओं का संग करके उपदेश लेना चाहिए। यह सच्चे ब्रह्मचारी का काम है।" डॉक्टर की यह बात सुनकर कन्साला गांव में साधुओं से मिलकर हाथ जोड़कर शिष्य बनने की प्रार्थना की। साधू मुझे पकड़कर हमारे घर ले गये क्योंकि साधू हमारे घरवालों को जानते थे। जब साधू मुझे घर पर ले गए तो मेरे बहन भाईयों ने मेरा पीला बाना उतार दिया और सभी मुझे देखकर रोने पीटने लगे और कहने लगे कि हम तुझे साधू नहीं बनने देंगे। मैंने रोकर और हाथ जोड़कर सबसे मांफी मांग कर यह वचन कहा, "या तो मुझे साधू बनने दो नहीं तो मैं अपनी जान खो दूंगा।" यह वचन सुनकर मेरे माता-पिता, भाई-बन्धु रोने लगे परन्तु मेरे चाचा ने मुझको धीरज देकर सिर पर हाथ रखकर यह वचन कहा कि बेटा तू सच्ची फकीरी कर किसी तरह का भी हमारे और अपने कर्म में बुरा न करना। जाओ आपकी फकीरी सफल हो। मैं अपने चाचा के पैरों में सिर टेककर नमस्कार किया और उनको अपना

ज्ञान मार्ग में पहला सच्चा साथी देखा। फिर मैंने साधुओं के साथ जाकर सुनहेड़ा गांव में चन्दनदेव गुरु धारण करके उनको अपना तन, मन, धन अर्पित किया। फिर गुरु जी ने मुझे सच्चा मन का बाना देकर गेरूआ वस्त्र पहनाकर साधुओं के पास हरिद्वार भेज दिया। वहां जाकर मैं संस्कृत पढ़ने लगा। परन्तु वहां का खान-पान और आबो हवा मेरे मुवाफिक नहीं आई। फिर मैं वापिस मुज्जफरनगर जिला गांव ऊण में भक्त डॉ० रामस्वरूप के पास आकर संस्कृत पढ़ने लगा फिर मैंने क्या देखा कि डॉक्टर के पास उत्तराखण्ड से दो योगी डॉक्टर को ज्ञान सिखा रहे है। यानि उनको योग क्रिया और मुद्रा सिखा रहे थे। एक दिन मैंने साधुओं के साथ जाकर साधुओं के दर्शन किए और अपनी योग क्रिया सीखने की इच्छा प्रकट की। यह देखकर मुझे डॉक्टर रामस्वरूप ने योग सीखने पर जुटा दिया। मेरे जन्म-जन्मान्तर के तप ने मेरा साथ देकर मुझे योग क्रिया और मुद्रा तीन महीने में सब हासिल हो गई। फिर मैंने उन साधुओं से पूछा कि पढ़ना अच्छा है या योगाभ्यास करना अच्छा है। उन्होंने मुझको जवाब दिया कि पढ़ने से मन नहीं रुकता है, भगवान का भजन कर, दूसरे जीवों की सेवा करना, निष्काम सेवा करना पढ़ने से कई गुणा अच्छा है। पढ़ना पुण्य दान करना यह तो स्वर्ग का रास्ता है और मन इन्द्रियों को जीतकर भजना करना

या निष्काम सेवा करना यह मुक्ति देने वाला है। भगवान के भजन के बराबर कोई भी काम नहीं है। साधुओं के ये वचन सुनकर मैंने मौन धारण करके सच्चे मालिक का शरण लिया और रात-दिन गायत्री मंत्र का जाप करने लगा। कुछ दिन के बाद मैं फिर हरियाणा में रोहतक जिला के गांव सिसाना गढ़ी के जंगल में बैठकर योगाभ्यास करने लगा और एकान्त में बैठकर उस मालिक के नाम पर खूब रोता एक दिन मैं रात को डर गया तो मैंने आंख मींचकर रोना शुरू किया। इतने में एक सफेद वस्त्रों वाला आदमी खड़ा हुआ दिखाई दिया। फिर मैंने आंख खोलकर देखा तो मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया और मेरा सब डर दूर हो गया। मेरे सारे शरीर में राम नाम की धुन यानि आवाज होने लगी। मुझे चारों और प्रकाश ही प्रकाश दिखने लगा। इतना बड़ा आनन्द आया कि मैं उसकी हजारों मुंह से भी नहीं बता सकता। उस दिन के बाद मैं फिर कभी नहीं डरा।

एक दिन मैं किसी क्रिया में फंस गया और बहुत दु:खी होकर मैंने एक पत्र लिखा कि मैं अपने आप शरीर छोड़ रहा हूं किसी पर कोई दोष न लगाना। यह लिखकर मैंने पदम आसन लगाकर अपने प्राण को ऊपर खींचकर ओ३म् शब्द का जाप किया और शरीर छोड़ने का पक्का निश्चय किया और भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवान मेरी इच्छा पूरी हो, मैं

आपकी शरण में आ गया हूं। जैसे आपकी मर्जी हो वैसा करो। ओ३म् नमो नारायण। हे मालिक मेरी रक्षा करो। मैं आपका बालक हूं। तेरे बिना मेरा कोई नहीं है। यह कहकर मैंने प्राणों को झटका दिया। बस इतने में मेरी योग मुद्रा सिद्ध हो गई और मैं ब्रह्माण्ड की सैर करने लगा। मेरे दिल में बहुत बड़ी खुशी हुई। मैं सच्चे मालिक की गोद में बैठकर आनन्द लेने लगा। उस दिन मुझे सच्चे सतगुरु मिले और मुझे सच्चा उपदेश दिया। अन्दर से यह आवाज आई-

"तेरा मालिक तेरे अन्दर है, इसकी तू कर खोज।
नौ दर मून्द कर सुमरण करा कर, दर्शन होवेगें रोज।।
दया, नम्रता, कोमलता, शील और संतोष।
इनको ले सुमरण करें, निश्चय हटें सब दोष।।"

माता तेरी भक्ति है, पिता तेरा भगवान।
धर्म तेरा रक्षक है, सुख का दाता ज्ञान।।

इनका सरलार्थ आगे लिखते है :-

सतगुरु का वचन यह है- 1. तेरा भगवान तेरे अन्दर है, बाहर तू कहीं मत भटक। नौ इन्द्री काबू में करके दसवें द्वार में घुस जा इसके अन्दर सहस्र दल का प्रकाश है उसके अन्दर आगे ब्रहमन्दर है। यह योग का मार्ग है। इसमें इन्द्री और मन

को बस में करके अन्दर जा सकता है।

2. दया, नम्रता, कोमलता, शील, संतोष इनको लेकर उस मालिक की पूजा कर फिर भगवान की तेरे ऊपर कृपा होगी और आवागमन का नाश होगा फिर भगवान की शरण में आत्मानन्द का आनन्द लेवेगा।

3. मां तो तेरी भक्ति है, इससे तू नफरत न कर यह तेरा पालन पोषण करती है। यह तेरी सच्ची मां है और परमात्मा तेरा सच्चा पिता है, इससे दूसरा और कोई पिता नहीं है और धर्म कर्म तेरा साथी है और ज्ञान जैसा सुख नहीं है। हर वक्त मां की गोद में बैठकर पिता का ध्यान किया कर, प्रेम में मग्न रहा कर। धर्म, कर्म और गुरु को याद रख इसी से तेरा भला होगा। वेद, गुरु और सतगुरु रास्ता बताने वाले है, कर्म करना तेरा फर्ज है। कर या न कर।

दोहा :-

सुरत पिया का हुआ मेला,
ना कोई गुरु ना कोई चेला।

मतलब भगवान् की प्राप्ति होने पर गुरु चेला एक हो जाते है। कोई भेद नहीं रहता है। इसलिए भगवान के आश्रय रहकर निर्भय रहकर भजन करो और आनन्द लो यह हमारा सच्चा वचन है। आप तिरो और औरों को तिराओ यही इस

शरीर का लाभ है।

मैंने सतगुरु का उपदेश सुनकर अपने दिल में बहुत खुशी मनाई और मैं उसी दिन से अकेला एकांत में रहकर भगवान की गोद में बैठकर आनन्द लेता हूं और शरीर के दुःख-सुख, हानि-लाभ को देखकर भी मग्न रहता हूं। मुझे सबसे बड़ा धन भगवान ने संतोष दे रखा है। गुरु और भगवान की कृपा से मैं बहुत सुखी हूं। जो पाना था सो पा लिया अब तो मौत की इंतजार में बैठे हैं जब आएगी इस शरीर को ले जाएगी। हम तो भगवान के पास रहेंगे।

जय गुरु देवाय नमः। जय सतगुरु देवाय नमः।।

सब साधु सन्तों को मेरी हाथ जोड़कर नमस्कार।

ॐ नमो नारायण

ॐ शान्ति, ॐ शान्ति, ॐ शान्ति